कक्षा 11– अर्थषास्त्र

भारत में मानव पूंजी का निर्माण

मानव पूंजी

मानव पूंजी से आशय तकनीकी दृष्टि से प्रशिक्षित एवं कुशल श्रम शक्ति से होता है। मानव संसाधन को मानव पूंजी में परिवर्तित करने के लिए मानव पूंजी में निवेश की आवश्यकता होती है। शिक्षा तथा प्रशिक्षण द्वारा वह तकनीकी ज्ञान व कुशलता प्राप्त करता है तथा अच्छे स्वास्थ्य से कार्य करने की क्षमता प्राप्त करता है। जिससे उसकी उत्पादकता तथा आय में वृद्धि होती है।

मानव पूंजी निर्माण

किसी देश के मानव संसाधन को शिक्षा, स्वास्थ्य व प्रशिक्षण द्वारा विकसित करके मानव पूंजी में बदला जाता है। मानव को मानव पूंजी में बदलने की प्रक्रिया को मानव पूंजी निर्माण कहा जाता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत मानवीय शक्ति के विकास हेतु भारी मात्रा में विनियोग किया जाता है जिससे मानव शक्ति, तकनीकी कुशलता व योग्यता प्राप्त करती है।

प्रो0 मायर के अनुसार– ''मानव पूंजी निर्माण ऐसे लोगों को प्राप्त करने तथा उनकी संख्या को बढ़ाने की प्रक्रिया है जिनके पास कुषलताएँ शिक्षा और अनुभव होता है जो किसी देश के आर्थिक विकास एवं राजनीतिक विकास के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है।''

मानव पूंजी निर्माण के स्रोत

मानव पूंजी निर्माण के दो प्रमुख स्रोत हैं। 1– आन्तरिक स्रोत 2– बाह्य स्रोत

आन्तरिक स्रोत– मानव पूंजी निर्माण के आंतरिक स्रोत इस प्रकार हैं–

1– शिक्षा– शिक्षा पर निवेश मानव पूंजी निर्माण का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है। शिक्षा व्यक्ति को अधिक कुशल बनाकर उसकी उत्पादन क्षमता में वृद्धि करती है। एक पढ़े –लिखे व्यक्ति की कार्य क्षमता अनपढ़ व्यक्ति की तुलना में सदा ही अधिक होती है।

प्रो0 टी0गिल के अनुसार–''शिक्षा पर किया गया विनियोग आर्थिक विकास की दृष्टि से सर्वाधिक सार्थक विनियोग माना जाएगा।''

2– स्वास्थ्य– स्वास्थ्य पर किया गया विनियोग स्वस्थ श्रमबल की पूर्ति को बढ़ाता है। एक स्वस्थ व्यक्ति ही किसी कार्य को पूरी क्षमता से कर सकता है। इसी कारण स्वास्थ्य मानव पूंजी निर्माण का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

3– प्रशिक्षण– देश में विशिष्ट तकनीकी तथा औद्योगिक संस्थानों की स्थापना द्वारा व्यक्तियों को अधिक कार्य कुशल बनाया जाता है। फर्में भी अपने कर्मचारियों के प्रशिक्षण पर व्यय करती हैं। यह कार्य वे कारखाने के अंदर भी करती हैं तथा अन्य प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण भी दिलवाती हैं।

4– प्रवसन तथा सूचना– सामान्यतः लोग शिक्षा, प्रशिक्षण तथा अधिक आय प्राप्त करने के लिए प्रवास करते हैं तथा शिक्षा व स्वास्थ्य से संबंधित सूचनायें प्राप्त करके लाभांवित होते हैं। प्रवसन के दौरान किये जाने वाले व्यय की तुलना में आय में अधिक वृद्धि होती है। अतः श्रम बाजार एवं अन्य बाजारों के विषय में जानकारी प्राप्त करने पर किया गया व्यय भी पूंजी निर्माण का स्रोत है।

बाह्य स्रोत– बाह्य स्रोत से आशय देश की मानव शक्ति को प्रशिक्षित करने के लिए विदेशी सहायता प्राप्त करना है। यह दो प्रकार से प्राप्त की जा सकती है–

1– विदेशी प्रशिक्षित प्राविधिक व्यक्तियों को स्थाई या अस्थाई आधार पर देश में नियुक्त करना।

2– देश के श्रमिकों को प्राविधिक ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए विदेश भेजना।

भारत में मानव पूंजी निर्माण की समस्याएँ

भारत में मानव पूंजी निर्माण की समस्याएँ निम्नलिखित हैं–

1– आवश्यक मानव पूंजी के स्टॉक का अनुमान लगाने की समस्या– भारत जैसे विकासशील देशों में मानव पूंजी के कुल स्टॉक का अनुमान लगाना एक कठिन कार्य है। विकास की प्रारम्भिक अवस्था में तो यह और भी कठिन होता है।

2– जनसंख्या वृद्धि– भारत में जनसंख्या वृद्धि तीव्र गति से जारी है। इतनी अधिक जनसंख्या को मानव पूंजी में बदलने के लिए बहुत अधिक संसाधनों की आवश्यकता होती है। जिसकी व्यवस्था कर पाना आसान नहीं है।

3– शिक्षा में विनियोजन का ढांचा निर्धारित करने की समस्या– भारत में प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा पर बहुत अधिक बल दिया जाता है। जिसके लिए बहुत अधिक संसाधनों का व्यय किया जाता है। इससे विभिन्न क्षेत्रों में दबाव पड़ने से आर्थिक विकास पर बाधा पड़ती है।

4–उच्च शिक्षा के अनुचित प्रसार की समस्या– शिक्षा के स्तर में सुधार किये बिना तथा आवश्यक संसाधनों की व्यवस्था के बिना ही उच्च शिक्षा हेतु विश्वविद्यालय खोले जा रहे हैं। जिससे शिक्षा के स्तर में गिरावट आ रही है तथा बेरोजगारों की संख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

5– कृषि शिक्षा, स्त्री एवं प्रौढ़ शिक्षा तथा कार्यरत प्रशिक्षण कार्यक्रमों का अभाव– भारत में कृषि शिक्षा, स्त्री एवं प्रौढ़ शिक्षा तथा कार्यरत प्रशिक्षण कार्यक्रमों पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है जिससे उत्पादक क्रियाओं तथा उत्पादक दृष्टिकोण का अभाव बना रहता है।

6– मानव पूंजी निर्माण एक सतत् व लम्बी प्रक्रिया– मानव पूंजी निर्माण एक सतत व लम्बी प्रक्रिया है जिसके परिणाम दीर्घकाल में प्राप्त होते हैं। अतः इसमें निजी क्षेत्र रूचि नहीं लेता है। अतः मानव पूंजी निर्माण का स्तर निम्न बना रहता है।

7– रूढ़िवादिता– भारत में लोगों के परम्पराओं व रूढ़िवादिता से ग्रस्त होने के कारण नई तकनीक अपनाने में बाधा आती है।

8– क्षेत्रीय विषमताएँ– मानव पूंजी निर्माण के लिए आवश्यक सेवाएँ विभिन्न क्षेत्रों में असंतुलित रूप से वितरित हैं। ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में यह अंतर बहुत अधिक है। शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओं की शहरों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में अत्यधिक कमी है। प्राथमिक शिक्षा पर प्रति विद्यार्थी होने वाले सार्वजनिक व्यय में राज्यों में काफी अंतर है।

9– इच्छाशक्ति का अभाव– निम्नस्तरीय जीवन बिताने के कारण देशवासियों में ऊपर उठने की तीव्र इच्छा तथा आवश्यक संसाधनों का अभाव होता है।

10– स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी– भारत में प्रतिव्यक्ति स्वास्थ्य सुविधाओं की अत्यन्त कमी है। यह शहरी क्षेत्रों में फिर भी उपलब्ध है परंतु ग्रामीण क्षेत्रों में इनका अत्यन्त अभाव है।

11– कौशल का विदेशों को पलायन– भारत में उच्च शिक्षित एवं कौशल युक्त श्रम विदेशों की ओर पलायन कर जाता है।

मानव पूंजी निर्माण का महत्व

किसी भी देश के तीव्र आर्थिक विकास में मानव पूंजी का विशेष महत्व है। आर्थिक विकास मानवीय प्रयत्नों का ही परिणाम है। आर्थिक विकास के लिए भौतिक पूंजी की अपेक्षा मानवीय पूंजी अधिक महत्वपूर्ण है। भौतिक पूंजी का निर्माण मानव पूंजी के द्वारा ही किया जाता है। यदि मानव पूंजी में कम विनियोग किया जाए तो आर्थिक विकास की प्रक्रिया धीमी पड़ जाएगी।

अल्पविकसित देशों में आर्थिक विकास कम होने का कारण संसाधनों की कमी के साथ साथ कौशल तथा ज्ञान में कमी होना भी है । इन देशों द्वारा भौतिक संपत्ति के निर्माण पर अधिक बल दिया गया है जबकि विकास के लिए मानव पूंजी निर्माण पर अधिक बल दिये जाने की आवश्यकता है।

एक विकासशील अर्थव्यवस्था में आर्थिक विकास की गति को तेज करने में मानव पूंजी निर्माण निम्न प्रकार से सहायक हो सकता है–

1– यह अल्पविकसित देशों के समग्र वातावरण में परिवर्तन ला सकता है। यह लोगों की आकांक्षाओं, अभिव्यक्तियों एवं अभिप्रेरणाओं को विकासोन्मुखी बनाकर आर्थिक विकास के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार करता है।

2– मानव पूंजी निर्माण करके भौतिक पूंजी को अधिक उत्पादक बनाया जा सकता है।

3– मानव पूंजी निर्माण में निवेश भौतिक पूंजी निर्माण की अपेक्षा अधिक प्रतिफल देता है।

4– मानव पूंजी निर्माण श्रम बल की गतिशीलता बढ़ाता है।

5– आधुनिकी प्रौद्योगिकी का प्रयोग करके उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है।

इस प्रकार मानव पूंजी निर्माण में किया गया निवेश उपलब्ध संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग करके आर्थिक विकास की दर में वृद्धि कर सकता है।

भारत में मानव पूंजी निर्माण की स्थिति–

मानव पूंजी निर्माण शिक्षा, स्वास्थ्य, कार्यस्थल प्रशिक्षण, प्रवसन और सूचना निवेश का परिणाम है। इनमें शिक्षा तथा स्वास्थ्य मानव पूंजी के सबसे महत्वपूर्ण स्रोत हैं। भारत में शिक्षा क्षेत्रक के अन्तर्गत केन्द्र व राज्य स्तर पर शिक्षा मंत्रालय तथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं

प्रशिक्षण परिषद, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग शिक्षा को नियंत्रित करते हैं। सरकारी नियंत्रण के द्वारा निजी संस्थाओं की गुणवत्ता तथा कीमत को भी नियंत्रित किया जाता है।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में निजी तथा सार्वजनिक संस्थाओं दोनों का ही अस्तित्व है। निजी क्षेत्र में सुविधाएँ उपलब्ध कराने वाली संस्थाएँ कभी–कभी एकाधिकार स्थापित कर लेती हैं और शोषण करने लगती हैं। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि सरकारी नियंत्रण द्वारा इनको नियंत्रित करने की व्यवस्था की जाती रहे। स्वास्थ्य क्षेत्र के अन्तर्गत केन्द्र व राज्य स्तर पर स्वास्थ्य मंत्रालय और विभिन्न संस्थाओं के स्वास्थ्य विभाग तथा भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद निगरानी का कार्य करती हैं।

हमारे देश में एक बड़ा वर्ग गरीबी की रेखा से नीचे जीवन–यापन कर रहा है अधिकांश जनता स्वास्थ्य तथा शिक्षा का भार वहन नहीं कर सकती। ऐसी स्थिति में सरकार पिछड़े वर्गों को ये सुविधाएँ निःशुल्क उपलब्ध कराने का प्रयास करती हैं और केन्द्र तथा राज्य सरकारें पिछले कई वर्षों से अपने बजट में वृद्धि करती आ रही हैं।

विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में शिक्षा तथा स्वास्थ्य पर व्यय का प्रतिशत–

योजनाएँ	प्रतिशत व्यय
पहली पंचवर्षीय योजना	7.6%
दूसरी पंचवर्षीय योजना	5.8%
तीसरी पंचवर्षीय योजना	10.3%
चौथी पंचवर्षीय योजना	7.9%
पांचवीं पंचवर्षीय योजना	6.3%
छठी पंचवर्षीय योजना	6.8%
सातवीं पंचवर्षीय योजना	6.6%
आठवीं पंचवर्षीय योजना	8.3%
नौवीं पंचवर्षीय योजना	5.2%
दसवीं पंचवर्षीय योजना	5.7%
ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना	6.2%

भारत में विभिन्न योजनाओं में मात्र 5 से 8 प्रतिशत के बीच व्यय किया गया है तथा इसमें वृद्धि जारी है। जबकि विकसित देशों में यह प्रतिशत बहुत अधिक है।

भारत में कुल शिक्षा व्यय का बहुत बड़ा भाग प्राथमिक शिक्षा में व्यय होता है। उच्च तथा तकनीकी शिक्षा में होने वाला व्यय काफी कम है। इस व्यय में क्षेत्रीय विषमताएँ भी दिखाई देती हैं। इन विषमताओं के कारण ही विभिन्न राज्यों में शिक्षा के अवसरों और शैक्षिक उपलब्धियों के स्तर में भारी अंतर पाया जाता है।

प्राथमिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति–

प्राथमिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने 2009 में शिक्षा का अधिकार अधिनियम लागू किया जिसके अन्तर्गत 6 से 14 वर्ष के सभी बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा दी जाती है। उन्हें निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें तथा गणवेश उपलब्ध करवाया जाता है इसके साथ ही साथ सर्वशिक्षा अभियान के अन्तर्गत कक्षा 8 तक के सभी विद्यार्थियों के लिए मध्याह्न भोजन की व्यवस्था की गई है।

माध्यमिक शिक्षा–

माध्यमिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा केन्द्रीय तथा नवोदय विद्यालयों की स्थापना की गई है। साथ ही राज्य सरकार के विद्यालयों के स्तर को सुधारने हेतु केन्द्र सरकार द्वारा राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान प्रारम्भ किया गया है।

उच्च तथा तकनीकी शिक्षा–

सरकार द्वारा उच्च शिक्षा के विस्तार के लिए केन्द्रीय विश्वविद्यालय, राज्य विश्व विद्यालय तथा समकक्ष संस्थाओं की संख्या में निरन्तर वृद्धि की जा रही है।

तकनीकी शिक्षा के विकास के लिए पॉलीटेक्निक, इंजीनियरिंग कॉलेज, मेडिकल व डेन्टल कॉलेज, पैरा मेडिकल व अनेक अनुसंधान केन्द्र सरकार के द्वारा निरन्तर खोले जा रहे हैं।

भारत सरकार ने सभी केन्द्रीय करों पर 2 प्रतिशत शिक्षा उपकर लगाया है। जिससे प्राप्त राजस्व को प्राथमिक शिक्षा पर व्यय करने हेतु सुरक्षित रखा जाता है।

मानव पूंजी निर्माण तथा मानव विकास–

मानव पूंजी का विचार मानव को श्रम की उत्पादकता बढ़ाने का माध्यम मानता है। शिक्षा और स्वास्थ्य पर किया गया निवेश तब तक अनुत्पादक है जब तक कि उससे वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में वृद्धि न हो जबकि मानव विकास स्वास्थ्य एवं शिक्षा को मानव भलाई का अंग मानता है। मानव विकास वह अवसर प्रदान करता है जिससे वह उपयोगिता प्राप्त करने में चयन कर सकें। भले ही शिक्षा, स्वास्थ्य आदि पर निवेश से श्रम की उच्च उत्पादकता में सुधार न हो किन्तु इसके माध्यम से मानव कल्याण का संवर्द्धन तो होना ही चाहिए।

अतिलघु प्रश्नोत्तर–

प्रश्न 1– मानव पूंजी किसे कहते हैं?

प्रश्न 2– श्रमिकों के प्रवास से क्या आशय है?

प्रश्न 3– मानव पूंजी निर्माण के दो प्रमुख स्रोत बताइये?

प्रश्न 4– शिक्षा को नियंत्रित करने वाले दो सरकारी संगठनों के नाम बताइये?

प्रश्न 5– जनसंख्या को मानव पूंजी में कैसे बदला जाता है?

लघु प्रश्नोत्तर–

प्रश्न 1– मानव पूंजी निर्माण तथा मानव विकास में किस प्रकार का संबंध है?

प्रश्न 2– किसी देश के आर्थिक विकास में शिक्षा का क्या महत्व है?

प्रश्न 3– किसी देश में मानवीय पूंजी के प्रमुख स्रोत क्या होते हैं?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर–

प्रश्न 1– मानव पूंजी निर्माण से क्या आशय है? मानव पूंजी निर्माण के प्रमुख स्रोत क्या हैं?

प्रश्न 2– मानव पूंजी निर्माण की मुख्य समस्याएँ बताइये?

प्रश्न 3– मानव पूंजी निर्माण तथा मानव विकास में किस प्रकार का संबंध है?

प्ररन 4– मानव पूंजी निर्माण के महत्व पर प्रकाश डालिए?